वर्ष : 15, अंक : 1

"ईमानदारी मेहनत जिसकी शान है–वह मेरे देश का किसान है"

जनवरी–मार्च, 2020

पन्त प्रसार सन्देश

प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड

दूरभाष : 05944-233336, 233811, ई-मेल : direxteduqbp@gmail.com

हेल्प लाइन : 05944-234810, किसान कॉल सेन्टर: 1800-180-1551

संरक्षक : डॉ० तेज प्रताप, कुलपति
मुख्य सम्पादक : डॉ० अनिल कुमार शर्मा, निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी
सम्पादक : डॉ० बी.डी. सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं डॉ० बी.एस. कार्की, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान)

कुलपति संदेश

देश में हरित क्रान्ति की जन्मस्थली गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर के शिक्षा, शोध एवं प्रसार के समन्वित प्रयास से उत्तराखण्ड के साथ–साथ देश के अन्य क्षेत्र के कृषकों की उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान रहता है। विश्वविद्यालय द्वारा नित किये जा रहे नवीनतम अनुसंधान एवं परिष्कृत उन्नत तकनीकों को प्रसार शिक्षा निदेशालय एवं इसकी विभिन्न इकाईयों द्वारा कृषकों के द्वार तक हस्तानान्तरित किया जाता है। आज आवश्यकता है कि कृषकों हेतु ऐसी तकनीक विकसित की जाये जिससे उनकी आय वृद्धि का मार्ग प्रशस्त हो सके एवं युवा कृषक जो रोजगार की चाह में यहां–वहां भटकते हैं। इन तकनीक को अपनाकर अपने को सशक्त बनायें।

मुझे यह जानकर हर्ष की अनुभूति हो रही है कि प्रसार शिक्षा निदेशालय "पंत प्रसार संदेश" नामक त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशित करती है, जिसमें अनेक कृषकोपयोगी तकनीक, आने वाले समय के सम–सामायिक कृषि कार्यक्रम आदि समावेशित होते हैं। पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका कृषकों के स्वरोजगार एवं आय बढ़ाने में मददगार होगी।

शुभकामनाएँ।

(तेज प्रताप)
कुलपति

संदेश

कृषि विश्वविद्यालय एवं अन्य शोध केन्द्रों द्वारा तकनीकी का विकास निरन्तर रूप से किया जाता है। कृषि विज्ञान केन्द्र इन तकनीकों को कृषक समुदायों तक ले जाने में शोध एवं कृषक के बीच एक सेतु की भांति काम करते हुये उन्नत तकनीकों को सुगमता से कृषकों के बीच लोकप्रिय बना रहे हैं। वर्तमान में कोविड–19 वाइरस की महामारी के कारण विभिन्न कृषि कार्यों को सम्पादित कराने में भी देश के अनेक कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों का महत्वपूर्ण योगदान देखने को मिल रहा है। पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय व इसके कृषि विज्ञान केन्द्रों के प्रसार कार्यों को किसानों के बीच लोकप्रिय बनाने हेतु "पंत प्रसार संदेश" नामक त्रैमासिक पत्रिका प्रसार शिक्षा निदेशालय, गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर द्वारा प्रकाशित होती है, बहुत उपयोगी है। मैं आशा करता हूँ कि यह नवीन संदेशों के साथ किसानों के बीच और लोकप्रिय होगी।

अशोक कुमार सिंह, उप महानिदेशक (कृषि प्रसार),
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

वर्तमान में कृषि की विकसित तकनीक को कृषकों तक पहुंचाना एक बड़ी चुनौती है। दूरस्थ पर्वतीय क्षेत्र जो आज भी विकास से अछूते हैं, तक यह तकनीक ले जाना और भी मुश्किल है। पंत विश्वविद्यालय के मार्गदर्शन में विभिन्न जनपदों में स्थित कृषि विज्ञान केन्द्र बखूबी यह काम कर रहे हैं। कोविड–19 महामारी के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कृषि कार्यक्रम को सफल बनाने में इन वैज्ञानिकों के कंधों पर बहुत बड़ा नैतिक दायित्व है। अनेक अखबार एवं मीडिया के माध्यम से मुझे यह जानकर हर्ष होता है कि यह वैज्ञानिक कृषकों के बड़े मददगार के रूप में उभर रहे हैं। निदेशालय द्वारा "पंत प्रसार संदेश" नामक त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशित की जाती है, जिसमें कृषकों द्वारा किये जा रहे प्रथम पंक्ति प्रदर्शन, प्रशिक्षण व अन्य प्रसार कार्यक्रम समाहित होते हैं। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका कृषकों एवं कृषि आधारित प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु उपयोगी साबित होगी।

राजबीर सिंह
निदेशक, भा.कृ.अ.प.–अटारी, जोन–1, लुधियाना

कृषि प्रधान भारत देश की 60 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या कृषि एवं कृषि आधारित व्यवसाय से जुड़ी है। प्रायः देखा जाता है कि कृषक विकसित तकनीक का भरपूर लाभ नहीं ले पाते हैं, जिसका कारण उन्नत तकनीक हस्तांतरण का अभाव है। तकनीक हस्तांतरण में कृषि आधारित रेखीय विभाग, कृषि विज्ञान केन्द्र तथा स्वयं सेवी संस्थान का बहुत बढ़ा योगदान होता है। यदि कृषक को उसके क्षेत्र के अनुरूप कम लागत वाली ऐसी तकनीक मिल जाये जिससे उसका आर्थिक स्तर बढ़े तो यह उसके सर्वांगीढ़ विकास के साथ साथ पलायन रोकने में भी मददगार होगा। मेरा मानना है कि कृषक एवं वैज्ञानिक का जितना आपस में सम्पर्क बढ़ेगा, कृषकों हेतु उतना ही लाभकारी होगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि "पंत प्रसार संदेश" त्रैमासिक पत्रिका रेखीय विभाग के अधिकारी, प्रसार कार्यकर्ता एवं कृषकों के लिये मार्गदर्शक की भूमिका निभायेगी। इस पत्रिका के प्रकाशन के लिये लेखकों द्वारा किये गये अथक प्रयास हेतु मैं उन्हें बधाई देता हूँ।

अनिल कुमार शर्मा
निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

आगामी त्रैमास के कृषि कार्य : अप्रैल–जून

अप्रैल : मैदानी क्षेत्र–फसल

गेहूँ एवं जौ : फसल पकने पर यथासमय कटाई व गहाई कर लें।
चना, मटर, मसूर, उर्द एवं मूंग : चना, मटर एवं मसूर की तैयार फसल की कटाई कर लें। विलम्ब से बोयी गयी चने की फसल में फली छेदक कीट का प्रकोप होने पर रसायन का छिड़काव करें। ग्रीष्मकालीन उर्द एवं मूंग की फसल में बुवाई के 25–30 दिन पर सिंचाई करें। शुद्ध एवं गन्ने के साथ अन्तःफसलीय उर्द एवं मूंग की फसल में पीला मौजेक, माहू अथवा थ्रिप्स कीट लगने पर संस्तुत रसायनों का प्रयोग करें।
राई : परिपक्व फसल की कटाई व मड़ाई करें तथा दानों को अच्छी तरह सुखाकर भण्डारित कर लें।
सूरजमुखी : फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें तथा निराई–गुड़ाई कर खरपतवारों को निकाल लें। गुड़ाई के समय पौधों की जड़ों पर 10–15 से.मी. मिट्टी भी चढ़ा दें।
गन्ना : बसन्तकालीन गन्ने में सिंचाई करें तथा निराई–गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लें। शरदकालीन गन्ने एवं पेड़ी फसल में सिंचाई करें तथा संस्तुति अनुसार यूरिया की टॉप–ड्रेसिंग करें। इस माह गन्ने की बुवाई करनी हो तो कूँड़ से कूँड़ की दूरी 60 सेमी. रखें।

अप्रैल : मैदानी क्षेत्र–सब्जी

टमाटर : फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। फल छेदक कीट के नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायन का प्रयोग करें। तैयार फलों के विपणन का प्रबन्ध करें।
बैंगन : फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुडाई करें व यूरिया 50 कि.ग्रा./हे. का छिड़काव करें।
मटर : तैयार फलियों को तोड़कर बाजार भेजें। बीज वाली फसल की कटाई कर सुखायें, बीज निकाले, साफ करें व पूर्णतः सुखाकर भण्डारण करें।
प्याज : फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। इस समय कुछ कीट तथा बीमारियों का भी आक्रमण हो सकता है। अतः नियंत्रण हेतु तैयार रहें।
भण्डी, लोबिया, राजमा : तैयार फलियों को तोड़कर विपणन की व्यवस्था करें। यदि फसलें बीज वाली हैं तो तैयार फलियों को तोड़कर सुखायें व बीज निकालें।

अप्रैल : मैदानी क्षेत्र–फल

आम : बाग की सिंचाई करें। आन्तरिक ऊतकक्षय रोग की रोकथाम के लिए बोरेक्स 0.8 प्रतिशत का छिड़काव करें।
पपीता : फलों को तोड़कर बाजार भेजें एवं पौधशाला में बीजों की बुवाई करें।
लीची : बाग की 15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें। छोटी पत्ती रोग के नियंत्रण हेतु जिंक सल्फेट 0.5 प्रतिशत का छिड़काव करें।
नाशपाती, आड़ू, आलूबुखारा और बादाम : बाग की सिंचाई करें। फलों की छंटाई करें। बाग की चिड़ियों से रक्षा करें।

अप्रैल : पर्वतीय क्षेत्र–फसल

गेहूँ एवं जौ : घाटियों में बोयी गयी फसलों में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। तैयार फसल की कटाई कर लें। मध्य एवं ऊँचाई वाले क्षेत्रों में असिंचित फसल में 2 प्रतिशत यूरिया का घोल बनाकर पर्णीय छिड़काव करें।
राई, चना, मटर एवं मसूर : परिपक्व फसल की सावधानीपूर्वक कटाई व मड़ाई कर उपज को भण्डारित कर लें।
धान : माह के प्रथम पखवाड़े तक चेतकी धान की बुवाई पूर्ण कर लें। पिछले माह बोयी गयी फसल में जमाव के 20–25 दिन बाद निराई–गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लें।

अप्रैल : पर्वतीय क्षेत्र–सब्जी

आलू : फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। झुलसा बीमारी से बचाव के लिये संस्तुत रसायन का छिड़काव करें। फसल में 50 कि.ग्रा. यूरिया/हे. डालें। ऊँचे क्षेत्र के कृषक बुवाई करें।
टमाटर व बैंगन, शिमला मिर्च : फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। घाटी में फसल तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। ऊँचाई वाले क्षेत्रों में रोपाई करें।
भिण्डी, लोबिया व फ्रासबीन : घाटियों में तैयार हो रही फसल में फलियों की तुड़ाई कर विपणन करें। ऊँचाई वाले क्षेत्रों में बुवाई करें।

अप्रैल : पर्वतीय क्षेत्र–फल

सेब और नाशपाती : पौधशाला में जमे नए पौधों की सिंचाई करें। बाग में जिंक सल्फेट व बोरेक्स का छिड़काव करें।
आड़ू, खुबानी, आलूबुखारा, बादाम : जिंक सल्फेट और बोरेक्स का छिड़काव करें।

अप्रैल : पशुपालन

गाय–भैंस : पशुओं में मुँहपका–खुरपका रोग के बचाव हेतु टीकाकरण करवायें।
भेंड़ व बकरी : संक्रामक गर्भपात से बचने हेतु टीकाकरण करवाये। इसी प्रकार चेचक और एंटेरोटोक्सीमिया रोग के बचाव हेतु भी पशु चिकित्सक के परामर्श अनुसार टीकाकरण करायें।
कुक्कुट : आहार में मौसम के अनुसार परिवर्तन करें। मुर्गियों को संतुलित आहार खिलाएं।

मई : मैदानी क्षेत्र–फसल

चना : विलम्ब से बोयी गयी फसल पकने पर काट लें।
उर्द एवं मूंग : फसल में सिंचाई करें। परिपक्व फलियों की तुड़ाई कर लें तथा अच्छी तरह सुखाकर दाने निकाल लें।
सूरजमुखी : फसल में दाना पड़ते समय सिंचाई करें। तोते आदि पक्षियों से परिपक्व फसल की सुरक्षा करें। फसल में बिहार बालदार सूँड़ी तथा जैसिड्स का प्रकोप होने पर संस्तुत कीटनाशी रसायनों का छिड़काव करें।
गन्ना : नौलख एवं पेड़ी फसलों में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें तथा संस्तुत मात्रा में नत्रजन की टॉप–ड्रेसिंग करें। फसल में काला बग एवं अन्य कीटों का प्रकोप होने पर संस्तुत रसायन का प्रयोग करें।
धान : मध्यम एवं देर से पकने वाली प्रजातियों की नर्सरी माह के अन्तिम सप्ताह में डाल दें।

मई : मैदानी क्षेत्र–सब्जी

टमाटर : चूँकि इस माह में तापक्रम अधिक होता है अतः फल के रंग बदलने वाली स्थिति में ही इसे तोड़े व विपणन करें।
बैंगन : इस माह में फल बड़ी मात्रा में तैयार होते हैं। अतः विपणन प्रबन्धन सुनिश्चित करें। फसल में हल्की सिंचाई करें।

प्याज : यदि आवश्यक हो तो एक हल्की सी सिंचाई करें। आखिरी सप्ताह में पत्तियों को जमीन की सतह से झुका दे इससे गांठे सख्त हो जाती है।

लहसुन : अतिशीघ्र खुदाई करें। दो दिन तक खेत में सूखने दें बाद में छोटे–छोटे बण्डल बनाकर नमी रहित स्थान पर 10 दिन तक सुखायें, तथा भण्डारण करें।

मई : मैदानी क्षेत्र–फल

आम : नए बाग लगाने के लिये रेखांकन करके गड्ढे खोदें व बोरेक्स का छिड़काव करें।

केला : सप्ताह के अंतराल पर सिंचाई करें। अंवाछित पत्तियों को निकालें नए बाग लगाने के लिए गड्ढे खोदे।

नीबूवर्गीय फल : बाग में 15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें। फलों को गिरने से बचाने हेतु वृद्धि नियामक का छिड़काव करें।

लीची : बाग में 15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें। फलों को फटने से बचाने के लिए पानी का छिड़काव करें।

आड़ू नाशपाती व आलूबुखारा : अगेती किस्मों के फलों को तोड़कर बाजार भेजें। बाग की सिंचाई करें।

मई : पर्वतीय क्षेत्र–फसल

गेहूँ, जौ, सरसों, चना, मटर एवं मसूर : इन फसलों की समय पर कटाई कर लें एवं सूखने पर गहाई कर उपज को अच्छी तरह भण्डारित कर लें।

झंगोरा (मादिरा/साँवा) : अधिक उत्पादन लेने हेतु उन्नतशील प्रजातियों का चयन करें, जिनकी बुवाई ऊँचाई वाले क्षेत्रों में माह के प्रथम पखवाड़े तथा मध्यम व कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में माह के द्वितीय पखवाड़े में करें। फसल से अच्छी उपज लेने हेतु उन्नत प्रजातियों के साथ–साथ सस्य क्रियायें संस्तुति अनुसार करें।

मंडुवा, काकुन (कौणी) व रामदाना (चुआ/चौलाई/मारसा) : ऊँचाई वाले क्षेत्रों में इन फसलों की बुवाई माह के द्वितीय पखवाड़े में कर लें। अच्छी पैदवार लेने हेतु उन्नत प्रजातियों का चयन, बीज की मात्रा, बीज शोधन, बीज की बुवाई एवं उर्वरकों का प्रयोग संस्तुति अनुसार करें।

धान : मध्यम ऊँचे क्षेत्रों में सिंचित दशा (तलाऊँ) में रोपाई हेतु धान की नर्सरी माह के प्रथम पखवाड़े एवं घाटियों व कम ऊँचे क्षेत्रों में माह के द्वितीय पखवाड़े में रखें। चेतकी धान में निराई–गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लें। जेठी धान की सीधी बुवाई जून के प्रथम पखवाड़े में करें।

सोयाबीन : मध्यम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में फसल की बुवाई माह के अन्तिम सप्ताह में कर लें। भरपूर उपज लेने हेतु उन्नत प्रजातियों का चयन, व उन्नत सस्य तकनीक अपनायें।

अरहर : फसल की बुवाई माह के प्रथम पखवाड़े में करें। कम समय में तैयार होने वाली उन्नत प्रजातियों को बुवाई करें।

मक्का : मध्यम एवं ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रों में फसल की बुवाई माह के द्वितीय पखवाड़े में करें। भरपूर उत्पादन हेतु क्षेत्र विशेष को ध्यान में रखते हुए संस्तुत संकर अथवा संकुल प्रजातियों का चुनाव करें।

मई : पर्वतीय क्षेत्र–सब्जी

आलू : फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। झुलसा रोग के लक्षण दिखें तो संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

टमाटर व बैंगन : तैयार फलों की तुड़ाई कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें। फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें।

फ्रासबीन, भिण्डी, लोबिया : फलियों की विपणन तथा आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। यदि फसल बीज वाली है तो पकी फलियों को तोड़कर सुखायें व बीज निकालें।

पालक, धनियाँ, मेंथी : पत्तियों की कटाई करें। छोटी–छोटी गड्डियां बनायें व बाजार भेजने की व्यवस्था करें। फसलों में हल्की सिंचाई करें।

मई : पर्वतीय क्षेत्र–फल

सेब : जिन स्थानों पर सिंचाई की सुविधा हो, उन बागों की सिंचाई करें। पत्ती खाने वाले कीट के नियंत्रण हेतु रसायन का छिड़काव करें।

नाशपाती : बगीचे की सिंचाई करें। पत्ती खाने वाली कीट की रोकथाम के लिए रसायन का छिड़काव करें।

आड़ू व खुबानी : फलों की चिड़ियाँ व अन्य जंगली जानवरों से रक्षा करें। अगेती किस्मों के फलों को तोड़कर बाजार भेजें।

मई : पशुपालन

गाय व भैंस : गर्मी से बचाव हेतु पंखा–कूलर यदि उपलब्ध हो तो लगायें। लू से बचाव हेतु दिन में दो बार पशुओं के स्नान की व्यवस्था करें। गलाघोंटू, लगड़िया एवं एथ्रेक्स रोग हेतु पशु चिकित्सक से परामर्श कर टीकाकरण करवायें।

भेंड़ व बकरी : भेड़ों की ऊन काटने से पहले भेड़ों में पुट्ठे सूजने/पेट में कीड़े होने आदि रोग के बचाव हेतु पशु चिकित्सक की सलाह लें।

कुक्कुट : रानीखेत बीमारी एवं चेचक का टीका लगवायें। गर्मी में छत पर घास या छप्पर डालें, इसे गीला करें। मुर्गियों को इलैक्ट्रोलाइट पाऊडर ठण्डे पानी में डालकर पिलायें।

जून : मैदानी क्षेत्र–फसल

उर्द एवं मूंग : परिपक्व होने पर फसल की कटाई कर लें।

सूरजमुखी : मुण्डकों को भली–भाँति सुखायें तथा डण्डे से पीटकर दाने अलग कर लें।

गन्ना : शरदकालीन व बसन्तकालीन नौलख फसल एवं पेडी में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई एवं सिंचाई करें। पाइरिला, अगोला बेधक एवं तना बेधक कीट से बचाव हेतु संस्तुत कीटनाशी का छिड़काव करें।

धान : मध्यम शीघ्र एवं शीघ्र पकने वाली प्रजातियों की नर्सरी माह के प्रथम पखवाड़े एवं सुगन्धित धान की दूसरे पखवाड़े में डालें। पौध 21–25 दिन की होने पर रोपाई कर लें। सिंचित दशा में धान की सीधी बुवाई माह के द्वितीय पखवाड़े में करें।

अरहर : फसल की अगेती किस्मों (यू.पी.ए.एम. 120, पंत अरहर 291) की बुवाई माह के मध्य तक कर लें।

मक्का : फसल की बुवाई माह के प्रथम पखवाड़े में कर लें। बुवाई हेतु उपयुक्त संकर/संकुल प्रजातियों का चयन, बीज की मात्रा, बीजोपचार, बुवाई की विधि, उर्वरकों व खरपतवारनाशी रसायन का प्रयोग करें।

सोयाबीन : भावर क्षेत्रों में फसल की बुवाई माह के अन्तिम सप्ताह में करें।

मूँगफली : फसल की बुवाई माह के दूसरे पखवाड़े में कर लें। प्रजातियों का चयन, बीज शोधन, राइजोबियम कल्चर से उपचार, बुवाई की विधि एवं उर्वरकों व खरपतवारनाशी रसायन का प्रयोग संस्तुति के अनुसार करें।

जून : मैदानी क्षेत्र–सब्जी

टमाटर : फरवरी, मार्च में रोपी गई फसल इस माह समाप्त हो जाती है। बीज वाली फसल से बीज निकालें।

बैंगन : फसल से तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। बीज वाली फसल से बीज निकालें। जुलाई–अगस्त में रोपाई हेतु पौधशाला में बीज 1000–1200 ग्राम/हे. की दर से क्यारियाँ 15 सेमी. ऊंची, 5X1 मीटर आकार वाली बनायें।

प्याज, लहसुन : यदि खुदाई नहीं हुई है तो शीघ्र करें, सुखायें तथा नम रहित ठण्डे स्थान पर भण्डारण करें।

भिण्डी, लोबिया तथा राजमा : भिण्डी के फलों को तोड़कर बाजार भेजें। बीज वाली फसलों से तोड़ी गई फलियों को सुखायें व बीज निकालें।

चौलाई : आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। तैयार पौधों को उखाड़कर छोटी–छोटी गड्डियां बनाकर बाजार भेजें।

जून : मैदानी क्षेत्र–फल

आम : बाग की सफाई करें। नए बाग लगाने के लिए गड्ढ़ों की भराई का कार्य पूर्ण करें। मध्यम समय में परिपक्व होने वाली किस्मों को तोड़कर बाजार भेजें।

केला : पिछले माह खोदे गये गड्ढ़ों को भर दें। बाग की सिंचाई करें। पर्णचित्ती रोग की रोकथाम हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

नीबूवर्गीय फल : नए बाग लगाने के लिए गड्ढ़ों की भराई करें। जल निकास की नालियों की सफाई करें।

पपीता : बाग की सिंचाई करें। अगेती किस्म के फलों को तोड़कर बाजार भेजें।

आड़ू, नाशपाती व आलूबुखारा : आड़ू, आलूबुखारा की अगेती किस्मों के पके फलों को तोड़कर बाजार भेजें।

जून : पर्वतीय क्षेत्र–फसल

मंडुवा, काकुन (कौणी) व रामदाना (चुआ/चौलाई/मारसा) : मध्यम एवं कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में इन फसलों की बुवाई प्रथम पखवाड़े में करें। अधिक उत्पादन हेतु संस्तुत प्रजातियों का प्रयोग करें।

झंगोरा (मादिरा/सॉवा) : घाटियों एवं कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में फसल की बुवाई माह के प्रथम सप्ताह तक पूर्ण कर लें। खरपतवार नियंत्रण हेतु रसायन का प्रयोग, निराई–गुड़ाई एवं वर्षा के पश्चात् नत्रजन की टॉप–ड्रेसिंग संस्तुति अनुसार करें।

सोयाबीन : मध्यम एवं कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में फसल की बुवाई माह के प्रथम पखवाड़े में करें। बुवाई हेतु उन्नत प्रजातियों का चुनाव व अन्य सस्य क्रियायें संस्तुति अनुसार करें।

मक्का : निचले पर्वतीय क्षेत्रों में फसल की बुवाई माह के प्रथम पखवाड़े में करें। अच्छी उपज हेतु संकर/संकुल प्रजातियों का चुनाव, बीज की मात्रा, बीजोपचार, बुवाई, उर्वरक व अन्य सस्य क्रियायें संस्तुति अनुसार करें।

धान : जेठी धान की बुवाई प्रथम सप्ताह तक कर लें। प्रजाति का चुनाव, बीज की मात्रा, बीजोपचार, बुवाई, उर्वरकों का प्रयोग व अन्य सस्य क्रियायें संस्तुति अनुसार करें। सिंचित दशा (तलॉऊ) में रोपाई का कार्य मध्यम ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रों में माह के प्रथम पखवाड़े एवं घाटी व कम ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रों में माह के द्वितीय पखवाड़े में पूर्ण कर लें।

उर्द एवं मूँग : पर्वतीय घाटी वाले क्षेत्रों में इन फसलों की बुवाई माह के द्वितीय पखवाड़े में करें। अधिक उत्पादन हेतु उन्नत प्रजातियों का प्रयोग करें।

राइसबीन (नौरंगी), गहत (कुल्थी) एवं राजमा : राइसबीन तथा गहत की बुवाई माह के प्रथम पखवाड़े में करें। इसी तरह राजमा की बुवाई क्रमशः माह के प्रथम एवं द्वितीय पखवाड़े में करें।

जून : पर्वतीय क्षेत्र–सब्जी

आलू : फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई करें। झुलसा के नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

टमाटर, बैंगन, मिर्च, शिमला मिर्च, फ्रासबीन, भिण्डी, लोबिया : फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। घाटी में फसल तैयार हो रही फलों का विपणन करें, कीट रोग दिखते ही संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

जून : पर्वतीय क्षेत्र–फल

सेब, नाशपाती, आड़ू, आलूबुखारा, खुबानी : बाग में जल निकास की व्यवस्था करें। बाग में जल निकास की नालियाँ बना लें। तैयार हो रहे फलों का विपणन एवं समय पर तुड़ाई करें।

जून–पशुपालन

गाय व भैंस : लू से बचाने के लिए पशुओं को छायादार वृक्षों के नीचें बाधें। भैसों को दिन के समय तालाब में रहने दें। पशुओं के घर साफ–सुथरे व हवादार रखें।

भेंड़ व बकरी : पेट के कीड़ों के बचाव हेतु कृमि नाशक दवा चिकित्सक के परामर्शानुसार पिलायें तथा गर्मी से बचायें।

कुक्कुट : अधिक गर्मी के समय मुर्गियों की खुराक कम हो जाती है, जिससे उन्हें प्रोटीन की मात्रा पूरी नहीं मिल पाती। अतः उनके भोजन में 2–3 प्रतिशत प्रोटीन की मात्रा बढ़ा दें। मुर्गी घर में तापमान कम रखें तथा शैड के बाहर की जगह को गीला करें।

नवनियुक्त निदेशक प्रसार शिक्षा

डा. अनिल कुमार शर्मा, प्राध्यापक (कृषि वानिकी) द्वारा फरवरी 26, 2020 को निदेशक प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड का पदभार ग्रहण किया गया। कानपुर (उत्तर प्रदेश) में जन्में डा. शर्मा प्रारम्भिक शिक्षा कानपुर एवं इटावा से पूरी करने के पश्चात् आगरा विश्वविद्यालय, आगरा से 1981 में स्नातक एवं 1983 में स्नात्कोत्तर की शिक्षा ग्रहण की। वर्ष 1988 में कुमायूँ विश्वविद्यालय, नैनीताल से वनस्पति विज्ञान में पी.एच.डी. की

डिग्री पूरी कर कैरियर के प्रारम्भ में आपने वर्ष 1990 से 1992 तक डी.एस.टी. (विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग) परियोजना में युवा वैज्ञानिक के रूप में पंतनगर में कार्य किया। तत्पश्चात् वर्ष 1992 से 1994 दो वर्ष तक संयुक्त राज्य अमेरिका में पोस्ट डाक्टरल फैलोशिप की। विजिटिंग सांईटिस्ट के रूप में आप फिनलैण्ड व स्विट्जरलैण्ड का भ्रमण किये। अमेरिका से 1994 में वापसी के पश्चात् पुनः पंतनगर में एक वर्ष के लिए पोस्ट डाक्टरल फैलोशिप किये। वर्ष 1996 में आप प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर के अधीन कृषि विज्ञान केन्द्र, सहारनपुर में विषय वस्तु विशेषज्ञ (कृषि वानिकी) के पद पर पदभार ग्रहण किये। सहारनपुर में कुछ अवधि तक कार्य करने के पश्चात् आपने प्रसार शिक्षा निदेशालय में कार्य किया एवं वर्ष 2003 में आप शोध कार्यों से जुड़ गये। आपके शोध का प्रमुख केन्द्र बिन्दु राइजोस्फियर बॉयोलाजी (प्रकन्द जीव विज्ञान) रहा है।

डा. शर्मा अपने कैरियर में अनेक अन्तर्राष्ट्रीय भ्रमण जैसे स्विट्जरलैण्ड, फिनलैण्ड, स्पेन, डेनमार्क, स्वीडन, जर्मनी, फ्रांस, आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन इत्यादि किये। इनके साथ ही कान्फ्रैन्स में मुख्य वक्ता के रूप में आस्ट्रेलिया एवं ब्रिटेन का भी भ्रमण किये। आपने डी.बी.टी. (जैव प्रौद्योगिकी विभाग), डी.एस.टी., भा.कृ.अनु.प., पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा पोषित अनेकों परियोजनाओं का भी संचालन करने के साथ–साथ स्विट्जरलैण्ड, फिनलैण्ड, जर्मनी, डेनमार्क, आस्ट्रेलिया इत्यादि देशों के अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग से भी अनेक परियोजनाएं संचालित की। आप डी.बी.टी. में रिव्यू एक्सपर्ट समिति के सदस्य भी हैं। डा. शर्मा दो अन्तर्राष्ट्रीय प्रेस क्रमशः स्प्रिंगर व एल्सवेयर द्वारा प्रकाशित शोध पत्रिकाओं के रिव्यूअर भी हैं। अपने कैरियर में आप 150 से अधिक शोध पत्र, 25 से अधिक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सिम्पोजिया/कान्फ्रैन्स में प्रतिभाग किये, जिसमें से अनेक में चैयरमैन भी रहे। आपकी 05 पुस्तकें जो कृषि हेतु महत्वपूर्ण रोगाणुओं सम्बन्धी हैं, छात्रों व अन्य शोधार्थियों में अत्यन्त लोकप्रिय हैं। आपने जैव उर्वरक आधारित 02 उन्नत कृषि तकनीक क्रमशः ₹ 2.00 करोड़ व ₹ 14.00 लाख में उद्योगों को हस्तान्तरित किये। आप विश्वविद्यालय में योगदान देने के पश्चात् से कृषकों के उत्थान, कृषकोपयोगी प्रसार कार्यक्रम एवं शोध में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए जाने जाते हैं।

अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का सफल आयोजन

'कृषि कुंभ' के नाम से विख्यात 107वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का भव्य आयोजन मार्च 03–06 को किया गया। किसान मेले का उद्घाटन मार्च 03, 2020 को प्रगतिशील काश्तकार, श्री हीरा सिंह बिष्ट, ग्राम–कनलगाँव (बग्वालीपोखर), द्वाराहाट (अल्मोड़ा) द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि श्री हीरा सिंह बिष्ट स्वंय अपने–आप में सम्पूर्ण कृषक हैं, जो अनेक बड़े शहरों में शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् अपने गांव वापस आये और उन्नत कृषि प्रारम्भ किये। वर्तमान में श्री बिष्ट पॉलीहाउस में बेमौसमी सब्जी उत्पादन, डेयरी, घी, पनीर, मक्खन इत्यादि का कार्य कर रहे हैं।

किसान मेला प्रांगण का भ्रमण करते हुए मुख्य अतिथि

मेले में महाविद्यालयों एवं विभिन्न फर्मों ने स्टॉल लगाकर उत्पाद एवं तकनीकों का प्रदर्शन किया। अनुसंधान केन्द्रों द्वारा नवीनतम प्रजातियों के बीज, शाक–भाजी एवं फलों के उन्नत बीजों व पौधों की बिक्री, कृषि यंत्रों की प्रदर्शनी आदि का आयोजन किया गया। वैज्ञानिकों द्वारा मेले में विशेष व्याख्यानमाला तथा कृषक गोष्ठी का आयोजन किया गया। कृषकों के मनोरंजन हेतु सायंकाल सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। मेले का समापन मार्च 06, 2020 को प्रगतिशील कृषक श्री निर्मल सिंह तोमर द्वारा किया गया। समापन समारोह में निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. अनिल कुमार शर्मा ने मेले का संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रस्तुत करते

आगामी त्रैमास– अप्रैल–जून में आयोजित होने वाले प्रशिक्षणों की सूची

अ– समेटी–उत्तराखण्ड

क्र.सं.	विषय	दिनांक/अवधि	प्रतिभागी
1.	उन्नत खरीफ फसलोत्पादन तकनीक	अप्रैल 27–30, 2020	प्रत्येक जनपद से कृषि विभाग के 4–4 प्रसार कर्मी, कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिक एवं प्रगतिशील कृषक
2.	आय वृद्धि हेतु मुर्गी पालन	मई 13–16, 2020	प्रत्येक जनपद से 3 से 4 कुक्कुट फार्म स्कूलों के संचालक, बी.टी.एम., कुक्कुट पालक
3.	मोटे अनाजों की उन्नत खेती एवं मूल्यवर्धन	मई 20–22, 2020	हरिद्वार तथा ऊधमसिंहनगर को छोड़कर शेष जनपदों से कृषि विभाग के 4–4 प्रसार कर्मी, कृषक आदि
4.	मृदा परीक्षण एवं समन्वित उर्वरक प्रयोग	जून 10–13, 2020	मृदा परीक्षण से जुड़े प्रसार कर्मी तथा एन.जी.ओ., एफ.ए.सी. सदस्य, खाद डीलर, प्रगतिशील कृषक, बी.टी.एम.,

ब– प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई

क्र.सं.	विषय	दिनांक/अवधि	प्रतिभागी
1	पपीता उत्पादन व नर्सरी प्रबन्धन	अप्रैल 07–09, 2020	उत्तराखण्ड के कृषक
2	पपीता उत्पादन व नर्सरी प्रबन्धन	अप्रैल 15–17, 2020	उत्तराखण्ड के कृषक
3	पपीता उत्पादन व नर्सरी प्रबन्धन	अप्रैल 20–22, 2020	उत्तराखण्ड के कृषक
4	पपीता उत्पादन व नर्सरी प्रबन्धन	अप्रैल 27–29, 2020	उत्तराखण्ड के कृषक

हुए बताया कि छोटे–बड़े 400 से अधिक स्टॉल व लगभग 30 लाख रूपये के बीज, पौधे व कृषि साहित्य की बिक्री हुई।

मेले में प्रगतिशील कृषक सम्मानित

किसान मेला के उद्घाटन अवसर पर उत्तराखण्ड के नौ प्रगतिशील कृषकों को कृषि के क्षेत्र में अभिनव परिवर्तन लाने एवं उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करने के लिए मुख्य अतिथि द्वारा प्रतीक चिन्ह एवं प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया गया, जिनका विवरण निम्नवत् है।

प्रगतिशील कृषक को सम्मानित करते मुख्य अतिथि

क्र.सं.	कृषक का नाम	ग्राम/विकास खण्ड	जनपद
1.	श्री हयात सिंह	बरख (पाटी)	चम्पावत
2.	श्री हरमीत चौधरी	लिब्बरहेड़ी (नारसन)	हरिद्वार
3.	श्री रघुबर सिंह	सिमखोला (बिण)	पिथौरागढ़
4.	श्री जय सिंह गड़िया	ग्वालदम (थराली)	चमोली
5.	श्री हर्ष सिंह	सुनकिया (धारी)	नैनीताल
6.	श्रीमती जयमाला	शंकरपुर (सकरपुर)	देहरादून
7.	श्री बचे सिंह	चौसली (हवालबाग)	अल्मोड़ा
8.	श्री दिलबाग सिंह	राजपुरा रानी (काशीपुर)	ऊ.सि. नगर
9.	श्री संदीप गोस्वामी	हाट (अगस्त्यमुनि)	रूद्रप्रयाग

कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्र, मटेला (अल्मोड़ा)

- तीन प्रशिक्षण का आयोजन, जिससे 62 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। एक प्रक्षेत्र दिवस के आयोजन सहित रेखीय विभाग द्वारा आयोजित दो कृषि गोष्ठी में वैज्ञानिक प्रतिभाग किये।
- मार्च 08, 2020 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ने, उनके अधिकार के बारे में जानकारी दी गयी।
- डा. राजेश कुमार, कार्यक्रम सहायक द्वारा पर्वतीय क्षेत्रों में कद्दूवर्गीय सब्जियों की बेमौसमी पौध उत्पादन विषय पर रेडियो वार्ता दी गयी।
- उरेडा के तत्वाधान में कार्यशाला का आयोजन फरवरी 26 को ऊर्जा दक्षता ब्यूरो भारत सरकार एवं उत्तराखण्ड अक्षय ऊर्जा विकास अभिकरण (उरेड़ा) के तत्तवाधान में ''ऊर्जा दक्ष कृषि पम्प सैट एवं ऊर्जा संरक्षण'' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्वालदम (चमोली)

- कृषि की उन्नत तकनीक सम्बन्धी 10 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिसमें 209 कृषकों ने प्रतिभाग किया।
- जनवरी 11 को बागेश्वर से भ्रमण पर आये कृषकों के समूह को विभिन्न इकाईयों का भ्रमण कराया गया। वर्मी कम्पोस्टिंग पर चलचित्र प्रदर्शित कर इनके महत्व पर परिचर्चा की गयी। फरवरी 24, 2020 को कृषक–वैज्ञानिक संवाद का आयोजन कर कृषि जनित समस्याओं का समाधान सुझाया गया।
- फरवरी 27 को रिनुएबल ऊर्जा विकास एजेंसी (उरेडा) के सहयोग से ''ऊर्जा दक्ष कृषि पम्प सेट'' विषय पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार)

- स्तनपान का महत्व, गन्ने की अधिक उपज, गन्ने में खरपतवार नियंत्रण, जैविक खेती किसानों की आय को दुगना करने सम्बन्धी 09 प्रशिक्षण आयोजित किये, जिससे 184 कृषक लाभान्वित हुए। तीन स्वरोजगार परक प्रशिक्षण आयोजित किये गये। इसके अतिरिक्त कुक्कुट पालन व जल संरक्षण विषयक दो प्रशिक्षण (सात दिवसीय) का भी आयोजन किया गया।
- क्लस्टर तिलहन अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन सहित कुल 39.14 है. क्षेत्रफल पर 164 प्रदर्शन लगाये गये तथा 43 कृषकों की सहभागिता से लगभग 8.0 है. क्षेत्र पर ऑन फॉर्म ट्रायल लगाये गये।
- कौशल विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत वर्मी कम्पोस्ट एवं मशरूम उत्पादन विषयक दो 25 दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। केन्द्र पर कुल 48 कृषकों का आगमन हुआ।
- डा. योगेन्द्र पाल, विशेषज्ञ (मृदा विज्ञान) आई.आई.डब्ल्यू.बी. आर., करनाल में आयोजित प्रशिक्षण फरवरी 06–15 में प्रतिभाग किये।
- डा. नीलकान्त, सहनिदेशक पशु विज्ञान द्वारा दो रेडियो वार्ता क्रमशः पशुओं के संक्रामक रोग एवं इनसे बचाव के उपाय तथा कोविड–19 के संक्रमण काल में पशुपालकों द्वारा पशुपालन कार्यों में रखे जाने वाली सावधानियों एवं पशुओं का रखरखाव दी गई।

कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर)

- सात प्रशिक्षणों का आयोजन, जिसमें 140 कृषको ने प्रतिभाग किया। IFAD-ILSP देहरादून द्वारा वित्त पोषित तीन दिवसीय 04 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया।
- कल्स्टर प्रथम पंक्ति प्रदर्शनों के अर्न्तगत तिलहन में तोरिया के 154 प्रदर्शन, दलहन के अर्न्तगत मसूर के 10 है. में 38 प्रदर्शन, चने के 10 है. में 43 प्रदर्शन आयोजित किये गये है। मत्स्य पालन पर 05 आर्न फार्म ट्रायल, 02 है. तालाब में प्रदर्शन तथा 25 कृषक महिलाओ द्वारा गृह वाटिका प्रदर्शन लगाये गये हैं। गर्मी के धान के स्थान पर गर्मी के मक्का को बढ़ावा देने हेतु 15 है. क्षेत्रफल में प्रदर्शन आयोजित किया गया।
- बैकयार्ड पोल्ट्री के अर्तगत उत्तरा, कड़कनाथ आई.आई.आर. नस्ल के मुर्गी पालन को एकीकृत फसल प्रणाली के अर्न्तगत प्रदर्शित किया जा रहा है।
- अधिकाधिक बीज उपलब्धता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से सब्जी मटर प्रजाति काशी उदय का 06 कु. बीज एवं मसूर का 04 कु. बीज का उत्पादन किया गया। सब्जियो में लगभग 5000 कद्दूवर्गीय सब्जी पौध का उत्पादन किया गया।
- मार्च 11 को डा. अनिल कुमार शर्मा, निदेशक प्रसार शिक्षा द्वारा केन्द्र का भ्रमण करते हुए उनको और सुदृढ़ करने हेतु सुझाव दिये गये।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी (देहरादून)

- कुल 18 प्रशिक्षणों का आयोजन, जिससे 521 कृषक लाभान्वित हुए। कुक्कुट पालन पर एक पांच दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित, जिससे 10 ग्रामीण युवक लाभान्वित हुए।

- कुक्कुटों की विभिन्न प्रजातियों जैसे कड़कनाथ, उत्तरा, आस्ट्रोलार्प एवं आर.आई.आर. नस्लों पर 20 प्रक्षेत्रों पर प्रदर्शन (800 चूजे) लगाया गया।
- समाचार पत्रों के माध्यम से 07 कृषि तकनीक की जानकारी प्रदान की गई। वैज्ञानिकों द्वारा 27 कृषकों के प्रक्षेत्रों पर भ्रमण करके उनकी समस्याओं का समाधान किया गया।
- मार्च 14 को ग्राम–शंकरपुर में पशु स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें भारी संख्या में पशुपालक उपस्थित थे।

कृषि विज्ञान केन्द्र, जाखधार (रुद्रप्रयाग)

- सब्जी एवं फल उत्पादन तथा मृदा विज्ञान पर 08 प्रशिक्षणों का आयोजन किया, जिसमें 163 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया।
- स्वयं सेवी संस्था ए.टी. इण्डिया द्वारा फरवरी 19–20, 2020 को बेमौसमी सब्जी उत्पादन पर प्रक्षेत्र भ्रमण व मूल्य संवर्धन पर प्रशिक्षण दिया गया।
- आजीविका–आई.एल.एस.पी. परियोजना के अन्तर्गत किसानों हेतु माल्टा एवं हिल लैमन के मूल्य संवर्धन विषय पर फरवरी 11–14 को 127 महिला कृषकों को प्रशिक्षित किया गया। परम्परागत कृषि विकास योजना के अन्तर्गत मार्च 16–21 तक जैविक कृषि ज्ञानवर्धन शिविर का आयोजन किया गया।
- प्रक्षेत्र पर कीवी की पौध तैयार करने हेतु लगभग 1200 कटिंग व 4550 फल वृक्षों की बिक्री की गई।

कृषि विज्ञान केन्द्र, गैना–ऐंचोली (पिथौरागढ़)

- नर्सरी कार्यकर्त्ता के दक्षता कौशल विकास योजना के अन्तर्गत 200 घण्टे का प्रशिक्षण कार्यक्रम फरवरी 03–27, 2020 तक दिया गया, जिसमें 20 कृषकों ने प्रतिभाग किया।
- सब्जी मटर, प्याज, टमाटर, शिमला मिर्च, पत्तागोभी व फ्रासबीन के कुल 7.0 है. क्षेत्रफल में अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन चल रहे हैं।
- कृषि की तकनीक सम्बन्धी जानकारी हेतु केन्द्र पर 167 कृषक भ्रमण किये। वैज्ञानिकों द्वारा 10 किसान गोष्ठियों का आयोजन किया गया, जिससे कुल 597 किसान लाभान्वित हुए। अमर उजाला व दैनिक जागरण में 02 तकनीकी समाचारों को प्रकाशित किया गया।
- केन्द्र पर बटन/ढिंगरी मशरूम उत्पादन के साथ–साथ खीरा–1200, लौकी–1000, करेला–800, कद्दू–1200, बैंगन–5000, टमाटर–3000, पत्तागोभी–4000, शिमला मिर्च–6000 व तुरई के 800 पौधे विक्रय किए गए।

डा. शिव सागर सिंह उत्कृष्ट प्रसार वैज्ञानिक पुरस्कार

डा. निर्मला भट्ट, सह निदेशक, पादप रोग विज्ञान, कृषि विज्ञान केन्द्र, पिथौरागढ़ को डा. शिव सागर सिंह उत्कृष्ट प्रसार वैज्ञानिक के रूप में पुरस्कृत किया गया। आपने पिथौरागढ़ व कुमायूँ के अन्य जनपदों में मशरूम उत्पादन तकनीक व जैव नियंत्रकों के व्यापक प्रचार–प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। डा. शिव सागर सिंह उत्कृष्ट वैज्ञानिक पुरस्कार के अन्तर्गत ₹ 25,000.00 नकद व प्रतीक चिन्ह भेंट किया जाता है। यह पुरस्कार कृषि प्रसार/प्रसार शिक्षा क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले वैज्ञानिक/कार्मिक को दिया जाता है।

डा. निर्मला भट्ट को पुरस्कार प्रदान करते मुख्य अतिथि

शिखर

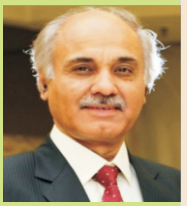

वर्तमान कोविड–19 के स्थिति में भारतीय कृषि हमेशा की तरह समय की कसौटी पर खरी उतरी है तथा राष्ट्र की रीढ़ की हड्डी साबित हुई है। कोविड–19 ने आम जनता के बीच पोषण तथा स्वस्थ भोजन के बारे में जागरूकता में वृद्धि की है, जिस कारण उच्च मूल्यों की स्थानीय फसलें जैसे सब्जियाँ, पोषक तत्वों से भरपूर दालें, मोटे अनाज तथा विभिन्न मसालें जैसे हल्दी, लहसुन, अदरक इत्यादि जो रोग प्रतिरोधकता बढ़ाते हैं, की खेती को बढ़ावा मिलना अपेक्षित है। इसी प्रकार औषधीय तथा सुगन्धित फसलों की खेती भी धनार्जन के नए अवसर प्रदान करेगी। वर्तमान परिस्थिति में यह आवश्यक हो गया है कि छोटे तथा सीमान्त कृषक फसलों की उत्पादकता बढ़ाने हेतु नवीन तकनीकों को अपनाएं तथा उत्पादन लागत कम करें। ऐसी परिस्थिति में कृषि विज्ञान केन्द्रों का दायित्व और भी अधिक अहम हो गया है।

जे. कुमार, कुलसचिव
गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर

कोविड–19 महामारी में मानव का एक–दूसरे से न्यूनतम सम्पर्क रखते हुए डिजिटल प्रसार द्वारा अधिकतम प्रसार कार्यक्रम सम्पादित किये जा सकते हैं। आने वाले समय में भोजन के साथ–साथ पोषण का महत्व भी बढ़ेगा। परिणाम स्वरूप भरपूर पोषण युक्त फसल/सब्जियों की माँग बढ़ेगी। धान्य फसलों की तुलना में जड़ व कन्द वाली फसलें जैसे मूल्यवर्धित आलू व शकरकन्द से प्रति इकाई क्षेत्र से न सिर्फ ज्यादा उपज बल्कि पोषण भी ज्यादा मिलता है। इन फसलों में विटामिन 'ए', विटामिन 'सी', आयरन व अन्य सूक्ष्म पोषक तत्व पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं। अद्वितीय कृषि पारिस्थितिकी के कारण उत्तराखण्ड आलू बीज उत्पादन व बेमौसमी आलू विपणन का हब बन सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय आलू केन्द्र का दिल्ली स्थित क्षेत्रीय केन्द्र विश्वविद्यालय एवं राज्य सरकार को इस दिशा में मदद हेतु सहर्ष तैयार रहेगा। वर्ष दर वर्ष ''पंत प्रसार संदेश'' पत्रिका कृषकों व प्रसार कार्यकर्ताओं के बीच अपनी पैठ बढ़ाने में सफल रही है।

यू.एस. सिंह
दक्षिण एशिया क्षेत्रीय समन्वयक
देश प्रबन्धक– भारत, भूटान व नेपाल
अन्तर्राष्ट्रीय आलू केन्द्र, नास काम्प्लेक्स, पूसा, नई दिल्ली

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

शोध केन्द्र का भ्रमण करते प्रशिक्षणार्थी

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा कृषि, उद्यान, पशुपालन, मत्स्य, आतमा पदाधिकारी व प्रगतिशील कृषकों हेतु कुल 06 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिससे कुल 105 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। प्रशिक्षण के विषय मशरूम उत्पादन, सब्जियों में समेकित कीट–रोग प्रबन्धन, कृषक से कृषक प्रसार तथा प्रसार सुधार कार्यक्रम में सूचना एवं संचार तकनीक का उपयोग थे। प्रशिक्षणों का आयोजन प्रशिक्षण समन्वयक, डा. बी.डी. सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) के मार्गदर्शन में किया गया।

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा कुल 18 प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिससे कुल 472 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। प्रशिक्षण के विषय कृषि विविधीकरण, पशुपालन प्रबन्धन, तिलहनी फसलों का उत्पादन, बीज उत्पादन, पुष्प उत्पादन, दुग्ध उत्पाद प्रसंस्करण, मत्स्य पालन तथा मूल्यवर्धित उत्पाद इत्यादि से सम्बन्धित थे। प्रशिक्षण एवं भ्रमण कार्यक्रम डा. एस.के. बंसल, प्राध्यापक एवं प्रभारी प्रशिक्षण के दिशा निर्देशन में सम्पादित किया गया।

एकल खिड़की पद्धति से कृषक सेवा

कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र द्वारा पंतनगर कृषक हेल्प लाईन 05944–234810, 05944–235580 एवं किसान कॉल सेन्टर 1800–180–1551 टोल फ्री के माध्यम से किसानों द्वारा पूछे गये कुल 277 प्रश्नों/समस्याओं का समाधान वैज्ञानिकों द्वारा किया गया। इस अवधि में 979 कृषकों द्वारा एटिक का भ्रमण किया गया। आगन्तुकों का विश्वविद्यालय एवं एटिक की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी देने के साथ–साथ फसलों व सब्जियों के बीज एवं एटिक द्वारा प्रकाशित तकनीकी साहित्य उपलब्ध कराया गया। मार्च 03–06, 2020 में किसान मेला में एटिक द्वारा कृषकों को सब्जियों के बीजों के साथ–साथ धान, उर्द एवं मूंग के उन्नत बीजों एवं कृषि साहित्य की बिक्री की गई। इस अवधि में कुल रू. 1,26,270.00 के कृषि साहित्य एवं रू. 1,46,107.00 के विभिन्न सब्जियों के बीजों का विक्रय तथा धान, उर्द एवं मूँग इत्यादि के कुल 12.90 कुन्तल बीजों का क्रय किया गया।

आभार

वर्ष दर वर्ष सिकुड़ता खेती का रकबा, खेती में बढ़ता जंगली जानवरों का प्रकोप, जलवायु परिवर्तन आदि किसानों के लिए बड़ी चुनौती बन के उभरें हैं। यद्यपि अनेक कृषक कृषि के लाभकारी इन्टरप्राइज जैसे मशरूम, मत्स्य पालन, डेयरी, फूलोत्पादन आदि को व्यवसाय के रूप में अपनाकर आय वर्धन करने के साथ–साथ अन्य कृषकों हेतु प्रेरणाश्रोत बनकर उभर रहे हैं। आज आवश्यकता है विकसित तकनीक के व्यापक प्रचार–प्रसार की, जिसमें कृषि विज्ञार केन्द्र के वैज्ञानिक व अन्य प्रसार कार्यकर्ता अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु ''पंत प्रसार संदेश'' जो आपके हाथ में है, सदैव कृषकों के मित्र के रूप में कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा रहता है। विश्वास है पूर्व की भांति यह अंक भी आपके लिए लाभकारी होगा। डा. अनिल कुमार शर्मा, निदेशक प्रसार शिक्षा को इस पत्रिका को तैयार करने में उनके द्वारा दिये गये मार्गदर्शन हेतु हम आभार व्यक्त करते हैं। सभी कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रभारी अधिकारी एवं वैज्ञानिकों व मुख्यालय के वैज्ञानिकों के भी त्वरित सहयोग के लिए आभारी हैं। पत्रिका को और बेहतर बनाने में आपका सुझाव हमारे लिए महत्वपूर्ण होगा। आप अपने सुझाव प्रथम पृष्ठ पर लिखे फोन नम्बर अथवा मेल आई.डी. पर प्रेषित कर सकते हैं।

धन्यवाद।

बी.डी. सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान)
एवं
बी.एस. कार्की, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान)

विश्वविद्यालय के अधीन कार्यरत कृषि विज्ञान केन्द्रों की सूची

क्र. सं.	जनपद का नाम	केन्द्र का नाम एवं पता	कार्यक्रम समन्वयक/ प्रभारी अधिकारी का नाम	सम्पर्क सूत्र		ई–मेल
				कार्यालय	मोबाइल नं0	
1.	चमोली	कृ.वि.के., ग्वालदम, जनपद–चमोली–246441	डा. अनिल पंवार	01363-274287	8474924343 9411188970	kvkchamoli@rediffmail.com
2.	अल्मोड़ा	कृ.वि.के., मटेला (कोसी), जनपद–अल्मोड़ा–263651	डा. एस.एस. सिंह	05962-241248	9761969696 8475001596	kvkalmora@gmail.com
3.	देहरादून	कृ.वि.के., ढकरानी, पो.–हर्बटपुर, जनपद–देहरादून–248001	डा. ए.के. शर्मा	01360-224378	8475002277	kvkdehradun@gmail.com
4.	हरिद्वार	कृ.वि.के., धनौरी, जनपद–हरिद्वार–247667	डा. पुरूषोत्तम कुमार	–	9411177299 8475002233	kvkharidwar@gmail.com
5.	नैनीताल	कृ.वि.के., ज्योलीकोट, जनपद–नैनीताल–263135	डा. वी.के. दोहरे	05942-224547	7500241504 9412966838	kvknainital@rediffmail.com, vijaydoharey@gmail.com
6.	पिथौरागढ़	कृ.वि.के., गैंना–एंचोली, जनपद–पिथौरागढ़–262530	डा. निर्मला भट्ट	–	9412044788	kvkpithoragarh@yahoo.com
7.	चम्पावत	कृ.वि.के., लोहाघाट,पो–गलचौरा, जनपद–चम्पावत–262524	डा. एम.पी. सिंह	–	9412925543	officerinchargekvklohaghat@gmail.com
8	रूद्रप्रयाग	कृ वि के, जाखधार, वाया गुप्तकाशी, जनपद–रूद्रप्रयाग–246439	डा संजय सचान	--	9450410994	kvkjakh@rediffmail.com
9.	ऊधमसिंहनगर	गन्ना शोध एवं कृ.वि.के., बाजपुर रोड, काशीपुर, जनपद–ऊधमसिंहनगर–244713	डा. जितेन्द्र क्वात्रा	–	7500241509	kvkkashipur@gmail.com